'पचीस साल की लड़की' की दुविधाग्रस्त लड़कियाँ

डॉ. सुषमा ठाकुर
(संयुक्त प्राध्यापिका)
हिन्दी विभागाध्यक्षा
कुमारी विद्यावती आनंद डी.ए.वी. महिला
महाविद्यालय, करनाल (हरियाणा)

सारांश

आधुनिक कहानी के क्षेत्र में ममता कालिया एक जाना–माना नाम है । उनका कहानी संग्रह 'पचीस साल की लड़की' समाज के एक ज्वलंत विषय पर आधारित है । कहानीकार के अनुसार वर्त्तमान समाज में लड़कियों का एक नया वर्ग अपनी ओर ध्यान खींच रहा है जो शिक्षित होकर पारिवारिक बंधनों को कुछ–कुछ अस्वीकार करने लगा है । अपनी जिन्दगी, अपना करियर, अपना भविष्य स्वयं तय करने की बात सोचने लगा है। समाज में धीरे–धीरे विवाह की उम्र सोलह अथवा अट्ठारह से बढ़कर पचीस–तीस तक होने लगी है और अतिरिक्त समय लड़कियों को परिपक्व होकर अपना भविष्य स्वयं निर्धारित करने के लिए मिलने लगा है जिसमें वे कभी–कभी शादी–विवाह को फजूल भी मानने लगी हैं । रही–सही कसर टूटते दाम्पत्यों या नवविवाहिताओं पर होने वाले अत्याचारों के समाचार पूरी कर रहे हैं, जो उनका विवाह से मोहभंग कर रहे हैं । समाज इस दृष्टि से भी बदल रहा है । एक नई चेतना जन्म ले रही है यद्यपि अभी शुरूआती स्थिति है । ममता जी के इस कहानी संग्रह की कहानियों में एक ओर युवा लड़कियों के बंधनमुक्त रहने की आकांक्षा दिखाई देती है तो दूसरी ओर सुखद गृहस्थी का स्वप्न भी उनसे छूटता नहीं है ।

इस शोध–पत्र में प्रस्तुत ऊपर चर्चित कहानी संग्रह को केन्द्र में रखकर नई पीढ़ी की युवतियों की इस कशमकश की स्थिति को महसूसने और परखने का प्रयास किया गया है ।

मूलशब्दः– अवसादग्रस्त, आज़ादख्याली, संसाधन

जब से तकनीक के क्षेत्र में संसाधनों का विस्फोट हुआ है; विश्व बहुत छोटा लगने लगा है । सब देशों की संस्कृतियाँ एक–दूसरे को अधिक प्रभावित करने लगी हैं । भारत में भी दूसरे देशों की तर्ज़ पर स्त्री शिक्षा का प्रसार हुआ है । आज स्थिति यह है कि शहरों में रहने वाली अधिकांश लड़कियाँ शिक्षा पा रही हैं, गाँवों की भी बहुत सी लड़कियाँ

शहरों में आकर पढ़–लिख रही हैं । शिक्षित होकर वे नौकरियॉ भी करने लगी हैं । छोटे–बड़े स्कूल–कॉलेज, छोटे–बड़े अस्पताल, दुकानें, होटल, ऑगनबाड़ी, अखबार के दफ्तर, आई.टी.सैक्टर, वृद्धाश्रम, अनाथाश्रम, सैंकड़ों तरह के सरकारी प्राईवेट दफ्तर, कार्यालय, सरपंच, पंच, सिपाही, पुलिस अधिकारी, यहॉ तक की फौज और शासन तन्त्र में भी उनकी घुसपैठ बढ़ी है । जब स्त्री के कार्यक्षेत्र परिवर्तित हुए हैं तो उसकी दिनचर्या, उसके रहन–सहन, उसकी जीवन सम्बन्धी प्राथमिकताओं में परिवर्तन आना भी स्वाभाविक है। यह परिवर्तन पूरी स्त्री जाति में तो नहीं लेकिन उनके एक बड़े वर्ग में सहज परिलक्षित हैं ।

आज के भारत की लड़कियॉ अब अपने लिए भी सोचने लगी हैं चाहे अभी इस तरह की लड़कियों का वर्ग बहुत बड़ा नहीं है लेकिन इस वर्ग के बढ़ने की पूरी–पूरी सम्भावना दिखाई दे रही है । गाय बनकर जो बेटियॉ पहले युवावस्था की दहलीज पर पॉव रखते ही एक खूंटे से दूसरे खूंटे बांध दी जाती थी, आज उनकी उस अवस्था में निस्संदेह बड़ा परिवर्तन है । वे अब सपने देखने लगी हैं–अच्छी नौकरी के, स्वयं की कमाई के, स्वावलम्बन के । वे विवाह नामक संस्था से इतर भी सोचने लगी हैं जो इस युग में होने वाला एक बहुत बड़ा क्रान्तिकारी बदलाव है । समाज में धीरे–धीरे विवाह की उम्र खिसकने लगी हैं । अट्ठारह उन्नीस से बढ़कर वह पचीस–तीस हो रही है । पहले करियर फिर विवाह का प्रचलन तो बढ़ा ही है । विवाह पर से लड़कियों का विश्वास भी उठ रहा है । 'पचीस साल की लड़की' कहानी संग्रह की कहानियॉ आज की लड़कियों की बन्धनमुक्त होती सोच या अपने नज़रिये से समाज अथवा दुनिया को देखने परखने की आज़ाद समझ को दिखाती हैं ।

युवा होती लड़कियॉ पच्चीस तक पहुॅचते–2 थोड़ी परिपक्व होने लगती हैं । अपनी विचार बुद्धि से समाज और दुनिया को देखने लगती हैं । आधुनिक काल की हिन्दी कथा लेखिका ममता कालिया के कहानी संग्रह 'पच्चीस साल की लड़की' के कवर पेज पर पुस्तक पर की गई टिप्पणी कुछ इस तरह है–''यों तो लड़कियों के जीवन में उम्र का सोलहवॉ साल बहुत नाजुक होता है पर पच्चीस साल की उम्र भी खास मायने रखती है । इन कहानियों में उस उम्र की युवतियों की मानसिकता, उनके जीवन–संघर्ष, राग–विराग को कहीं चटक तो कहीं उदास रंगों में प्रस्तुत किया गया है ।''[1] ... बढ़ती उम्र की अविवाहित लड़कियों का संसार को देखने का अपना ही अंदाज बन जाता है । 'चिर कुमारी' की दिशा युनिवर्सिटी में जंतुविज्ञान की प्राध्यापक है । पैंतीस की होने को आई पर अविवाहिता है । प्रकृति की गोद में जीव–जन्तुओं के बीच रहती है, खुश हैं, मस्त है पर कट्टर नारीवादी है ।

''शादीशुदा लोग समझाते–पैंतीस की उम्र इतनी ज्यादा भी नहीं होती, हम बताऍ कोई अच्छा–सा लड़का?

दिशा हॅस देती – अच्छे लड़कों से तो जी अघाया हुआ है । कोई पाजी लड़का बताइए।

इस पर पति ठहाका मारते, पत्नियों के मुॅह बन जाते । ×× दिशा का मनोरंजन हो जाता । ×× हैरानी की बात यह कि पच्चीस साल के विवाहित जीवन के बाद भी पत्नियों में असुरक्षा की भावना थी । ×××

यूनिवर्सिटी में उसके सहयोगी विवाहित होते हुए भी अपनी–अपनी तरह से एकाकी थे । ××× ये उदाहरण परोक्ष शिक्षा का काम करते । दिशा सोचती, कितनी मुश्किल से उसने यहॉ तक का सफर तय किया है। कई किस्म की ज्यादतियों और कमियों का मुकाबला उसने अपनी शिक्षा और प्रखर चेतना से किया था । शादी के नाम पर वह अपनी आज़ादी और आत्मनिर्भरता दॉव पर नहीं लगाना चाहती थी ।''[2] ... बेशक दिशा जैसी लड़कियों की संख्या समाज में धीरे–धीरे बढ़ रही है लेकिन साथ ही ऐसी भी बहुत सी लड़कियॉ हैं जिन्हें उम्र के फिसलने पर अहसास होता है अपने एकाकीपन का, वे जीवन साथी चाहती हैं लेकिन उम्र के उस पड़ाव पर यह काम अक्सर अंजाम तक नहीं पहुॅच पाता या इसमें अनगिनत परेशानियॉ आती हैं । इसी विषय को ममता जी की कहानी 'कौए और कोलकाता' बखूबी बयान करती है । माता–पिता विहीन हेमा अपनी मॉडल सुन्दरी बहन के पास छुट्टियॉ बिताने कोलकाता आती है । नौकरीपेशा बहन अपने सौंदर्य के प्रति बेहद सजग, सतर्क है और दिखावे की वही दुनियॉ उसे पंसद है यद्यपि एक दुर्घटना के पश्चात् वह अहसास कर लेती है कि उसकी उम्र की ढलान अन्य नई लड़कियों के यौवन की चकाचौंध को नहीं रोक पाएगी पर स्वयं को झूठ और भ्रम के जाल से मुक्त नहीं कर पाती । धीरे–धीरे वह अवसादग्रस्त भी हो रही है, ऐसा हेमा महसूस करती है । ''दीदी का अकेलापन देखती है हेमा । इतने बड़े शहर में उसका एक भी दोस्त नहीं जो बिना फोन, बिना सूचना धड़धड़ाता हुआ चला आए । कोई सगी–सहेली नहीं, जो उसकी शिथिल देह और मोच खाई टॉग के बावजूद, शाम चार बजे चाय पीने, गप्प मारने चली आए ।''[3] ... इतनी अकेली दीदी मात्र चार महीने पहले तक दुर्घटना से पूर्व मॉडलिंग की चकाचौंध भरी दुनिया में चार इंच की एड़ी की सैंडिल पहनकर रैम्प पर लचक कर चलती तो सारा हॉल सीटी मारता और सिसकारी लेता था । बहार हेमा को बताती है कि उससे शादी का प्रस्ताव रखने वालों में एक क्रिकेट खिलाड़ी, एक पंजाबी फिल्मों का हीरो और एक शेख रहा है । लेकिन इस तरह की उठान की गिरावट भी जल्द ही हो जाती है पर तब तक बहुत कुछ मुट्ठी में से रेत की भान्ति फिसल जाता है और रह जाती हैं केवल यादें और ''यादों के साथ दिक्कत यही है कि वे मौजूदा समय में हमें बहलाने के सिवा और कोई काम नहीं आती । हेमा ने बड़े तरस के साथ दीदी की तरफ देखा । अब यह बारह बजे तक पीती रहेगी, फिर खाने के नाम पर कै करेगी और धुत्त सो जाएगी। ×× सुबह उठकर नहा–धोकर झूठ और पाखंड को फिर हेलमेट की तरह सिर पर रख लेगी ।''[4]

अड़तीस की होने पर भी बहार विवाह के विषय में बात नहीं करना चाहती । स्वछंद जीवन पसन्द है उसे । प्रेम प्रसंग, पुरूषों की वाहवाही, उनका सौंदर्य के प्रति आकर्षण; यह सब चाहती है पर साथ ही स्वछंदता भी चाहती है । माता–पिता विहीन बेचारी हेमा को अपने विवाह का विज्ञापन स्वयं देना पड़ता है क्योंकि पैंतीस की होने पर भी खुद कोई रिश्ता चलकर आया नहीं था उसके पास और बड़ी बहन की सोच ऐसी थी नहीं कि वह उसके विवाह के बारे में सोचती ।

'सेमिनार' नामक कहानी में पाखी नाम की उभरती कहानी लेखिका शिमला में होने वाले एक सेमिनार में हिस्सा लेने जाती है तो वहॉ पर उसे अन्य महिला कहानीकार मिलती हैं जिनकी अजीबोगरीब स्वछंदता उसका ध्यान खींचती है । ''एक थी सुरेखा जी जो लम्बे अरसे से बड़ी निजी किस्म की कहानियॉ लिख रही थी । ×× पाठकों को उनकी कहानियों से पता चलता कि अब सुरेखा जी विदेश जाने वाली हैं, अब किसी एक के प्रेम से निकलकर दूसरे के प्रेम में पड़ने वाली हैं, ×× अब कुत्ता पालने वाली हैं । ××× दूसरी महिला एक प्रमुख अखबार की कला समीक्षक थी, बीना जेटली । ×× उसकी उम्र पच्चीस से चालीस के बीच कुछ भी हो सकती थी । ×× उसके होंठ लगातार सिगरेट पीने से जामुनी रंग के हो चुके थे ×× बीना के पास बड़ा–सा हैंडबैग था लेकिन सिगरेट की डिब्बी और माचिस वह हाथ में ही पकड़ती । दूसरे हाथ में वह अपना जिन का ग्लास थाम लेती ।''[5] इस तरह वर्तमान में अपने को संस्कार, परम्परा से अलग अथवा अति आधुनिक दिखाने के चक्कर में लड़कियों का एक अजीबोगरीब वर्ग भी उभर रहा है जिसकी कोई स्पष्ट विचारधारा नहीं है ।

'तोहमत' की दो सखियॉ आशा और सुधा कॉलेज में पढ़ते हुए बड़े–बड़े सपने देखती हैं । उनके सपनों में केवल बेहतर करियर है, विवाह सम्बन्धी कोई सपना नहीं है । ''फिलहाल आशा सुधा ने तय किया था कि एम.ए. के बाद न तो उन्हें शादी करनी है न घर बैठना है । वे आई.ए.एस. की तैयारी करेंगी और साथ–ही–साथ रिसर्च । ×× इन सपनों का अन्वेषण स्वयं उन्होंने किया था, अपनी शिक्षा के बूते, अतः इन पर उन्हें नाज था।''[6]

कई बार नौकरी पा जाने के बाद अपनी नौकरी का आकर्षण भी विवाह की तुलना में गुरूतर ठहरता है और अपने शहर का मनोनुकूल जीवन साथी मिल पाना सम्भव नहीं हो पाता । 'खानदान' की मीनाक्षी का परिवार शुद्धतावादी कट्टरता के चलते कई अच्छे रिश्ते ठुकरा देता है । एक दिन उसने बहनों से कहा भी–''सिर्फ गंगाजल पीनेवाला दामाद कहॉ से ढूँढेगे पिता जी ? एक चौखटा था जिससे बाहर निकलने को वह छटपटा रही थी पर उसके मन में निजी क्रान्ति का संकोच भी था फिर यहॉ उसके पास छह साल पुरानी पक्की नौकरी थी, इसका मोह भी कम नहीं था ।''[7] अक्सर अपनी अच्छी नौकरी को अविवाहित लड़कियॉ नहीं छोड़ना चाहती । लेकिन अकेले रहकर परिवार से दूर किसी

दूसरे शहर में नौकरी के चलते कई बार वे अजीबोगरीब चुनौतियों एवं परिस्थितियों को भी झेलती हैं । 'बीमारी' की नायिका ऐसी ही एक नौकरीपेशा अविवाहिता है जो माता–पिता के न रहने पर अपनी लम्बी बीमारी से घबराकर अपने विवाहित भाई को एक पत्र के माध्यम से अपनी बीमारी की सूचना दे देती है तो भाई–भाभी उसकी सेवा–टहल के लिए उसके पास आ भी जाते हैं । लेकिन उसे जल्द ही अहसास हो जाता है कि उसने कितनी बड़ी भूल की भाई–भाभी का बुलाकर । भाभी आते ही परेशान होकर उसे कहती है–''तुम कैसे गुज़ारा करती थी । कम–से–कम एक नौकर तो रखना चाहिए था । मैं चुप रही । उन्हें बताना मुश्किल था कि अकेली लड़की के घर नौकर के साथ क्या–क्या अफवाहें जुड़ जाती हैं ।''[8] भाई ने जब सारी रिपोर्ट्स लाकर दी तो स्पष्ट हुआ कि किडनी में इंफेक्शन था जिसका इलाज लम्बा था लेकिन वह भाभी के विषय में जानती है कि ''मेरी इस बीमारी को वह संदिग्ध समझ रही है । उसके ख्याल में कुँआरेपन में किसी भी प्रकार का इन्फेक्शन होना, चाहे किडनी में ही सही, सरासर दुश्चरित्र होने की निशानी थी ।''[9] बिल्कुल ऐसा ही अनुभव 'पच्चीस साल की लड़की' कहानी की नायिका का भी है जिसे एक दिन अपने बॉस के घर उसकी पत्नी से मिलने का अवसर प्राप्त होता है जो उसे बहुत ही तीखी और शक्की नज़र से देखती है । नायिका अपनी दयनीय स्थिति को बखूबी बयान करती है–'' मेरा अपराध सिर्फ इतना था कि मैं शर्मा जी की स्टेनो थी मेरी उम्र पच्चीस थी, मेरा विवाह अभी नहीं हुआ था और उपनिदेशक ने मुझे कुछ कागज़ों पर हस्ताक्षर कराने के लिए यहॉ भेजा था । पच्चीस साल की उम्र की पच्चीस परेशानियॉ थी, जिनमें से कुछ इस वक्त बुरी तरह खटक रही थी । इन दिनों लड़कियों के बीच औरत और औरतों के बीच लड़की गिनी जाने लगी थी । सच्चरित्र स्त्रियों में मुझे दुश्चरित्र और दुश्चरित्र स्त्रियों में कुछ सच्चरित्र समझा जाने लगा था । ×× मुहल्ले की छोटी लड़कियॉ मुझे अब आंटी कहने लगी थी, जबकि मैं स्वयं अभी बहुतों को आंटी कहने मनः स्थिति में थी ।''[10]

... अजीब दुविधा की स्थिति रहती है इन अविवाहित नौकरीपेशा पच्चीस–तीस बरस की लड़कियों की । अपनी नौकरी और आज़ादख्याली कभी–कभी इन्हें इतनी पसन्द होती है कि ये अपने परिवारवालों के साथ भी सुविधा महसूस नहीं कर पाती । ममता जी की लम्बी कहानी 'अकेलियॉ–दुकेलियॉ' की नायिका कुछ ऐसा ही उदाहरण है । वह स्वयं को अच्छी–खासी सामाजिक मानती है । सौ–दोसौ मित्र–जानकार हैं लेकिन बम्बई की किसी विज्ञापन कम्पनी में काम करते हुए वह अपने घर से दूर एक मेंशन में दो कमरों के फ्लैट में रहती है । वह अपने कंफर्ट ज़ोन में किसी को नहीं आने देती तभी कहती है–''...मैंने सामाजिकता को अपनी सुविधानुसार ही ग्रहण किया था । मुझे यह पसन्द न था कि दोस्त कभी भी धड़धड़ाते हुए मेरे घर में घुस आऍ । ×× घर की निजता, शुचिता और सुरक्षा को लेकर मेरे विचार बड़े निश्चित थे । किसी भी तरह का शोर, अशांति मैं बर्दाश्त नहीं

कर सकती थी । इसीलिए मैंने शादी तक नहीं की थी । तबालत तो मुझे किसी की भी मंजूर न थी, अपने सगे भाई–बहनों तक की । हम तीन भाई–बहन एक ही परिवार के होकर भी कमल–पत्र–से अलग और स्वतन्त्र थे ।''[11] अपने घर में किसी और को बर्दाश्त न करने वाली नायिका अपने फ्लैट के सामने वाले फ्लैट में रहने वाली महिला के जलकर मर जाने के बाद बुरी तरह सहम जाती है और सोचने लगती है–''इन दिनों मुझे बड़ी शिद्दत से महसूस हो रहा था कि इतने बड़े शहर की इतनी बड़ी इमारत में मेरा यों अकेले रहना ठीक नहीं । क्या पता कब क्या हो जाए । आए दिन चोरी, ठगी और बलात्कार की खबरें पढ़–पढ़कर मन अलग दहल जाता ।''[12] भय के साथ–साथ कभी–कभी समय पर विवाह न करने का अफसोस भी इस नायिका पर हावी हो जाता है । अजीब स्थिति है, अपने ही निर्णय को कभी कभी उसका मन प्रश्न करता है–''धीरे–धीरे एक अफसोस के एहसास ने मेरे पूरे वजूद को ढक लिया । घर बसाया होता तो ऐसी एक–दो बच्चियॉ मेरी भी होती । सीधी–सादी जिंदगी होती । कहीं बाहर से लौटकर आती तो मेरी बेटी झट चाय बनाकर पिलाती, साड़ी की तह लगाकर रखती, सिर दर्द होने पर सिर दबाती । यों अबकी तरह गोलियों के सहारे तड़पना न पड़ता । कहीं जाने की इच्छा होती तो बेटी संग–संग चलती । सच ही तो है, बेटी के बड़े होने पर मॉ–बेटी सखियॉ हो जाती हैं । उस किस्म की जिन्दगी में झंझट तो ज्यादा होता है पर यह मनहूस मायूसी तो न होती, न यह अकेलापन ।''[13]

... हर युवा लड़की विवाहित जीवन के हसीन सपने देखती है लेकिन विवाह के बाद नवविवाहिताओं के साथ होने वाली दुर्घटनाएँ इतनी अधिक बढ़ गई हैं कि लड़कियॉ विवाह से ही डरने लगी हैं । अन्य अनेक कारणों के साथ यह भी विवाह नामक संस्था से मोहभंग का एक प्रमुख कारण बनता जा रहा है । अखबार में छपी एक गृहिणी की तस्वीर जो संदिग्ध अवस्था में जल मरी, को देखकर 'अकेलियॉ–दुकेलियॉ' की दो स्त्री–पात्र आपस में चर्चा करती दिखती हैं–''अफशॉ फोटो को ध्यान से देखती–बताइए इस लड़की में क्या खराबी थी? ×× फिर इसे क्यों मार डाला । अब इसके शौहर को, इसके ससुरालवालों को क्या सजा मिलेगी?

सजा क्या, ये लोग यही साबित करने की कोशिश करेंगे कि वह खाना बनाते हुए जल गई । ×× भले ही घर में तीन–तीन नौकर रहे हों, साबित हमेशा यही होता कि बहू खाना बनाते हुए जल मरी ।

क्या सास खाना नहीं बनाती?

बनाती होगी पर अक्ल से । नाइलॉन की जगह सूती साड़ी पहनती होगी ।

मेरा ख्याल है आपा, इसके शौहर को अपने ऊपर मिट्टी का तेल डालकर आग लगाकर देखना चाहिए, इस तरह जल मरने में कितनी तकलीफ होती है ।''[14]

ऊपर वर्णित घटनाएँ समझदार लड़कियों में निस्संदेह विवाह के प्रति वितृष्णा ही

पैदा करती हैं । तर्कशील लड़कियों की अपनी स्वतन्त्र सोच विकसित हो रही है । नायिका अपनी सखी से कहती है–''औरत पहले पुरूष ढूँढती है, फिर एक भगवान, धीरे–धीरे उसकी सारी जिन्दगी एक तलाश और समर्पण बन जाती है । मेरी मॉ ने यह गलती की, मेरी मौसी ने की, मामी ने की, मैं नहीं करूँगी ।

आप अपने को बहुत आजाद रखना चाहती हैं ?

बेशक! जिस तरह इन्सान मुल्क की आजादी के लिए लड़ता है, उसी तरह उसे अपनी निजी आजादी के लिए लड़ना पड़ता है । ××

लेकिन कम–से–कम अपनी हिफाजत के लिए आपको कुछ करना चाहिए । ××

अफशॉ, डर ऐसी चीज है जो सोचने पर ही लगता है । फिर तुमने यह कैसे सोचा कि शादी कर लेने से हिफाजत का इन्तजाम हो जाता है । कई मर्द औरतों से भी ज्यादा डरपोक होते हैं । जो डरपोक होते हैं, वे स्वार्थी होते हैं । मेरी सहेली का पति कहता है, पत्नी को हमेशा ट्रैफिक–साइड पर रखकर चलो तो सुखी रहोगे । शादी के बाद के खतरे शादी के पहले के खतरों से ज्यादा बड़े होते हैं ।''[15] यही नायिका एक ओर इतनी आत्मविश्वासी और दिलेर है वहीं दूसरी ओर कभी–कभी कुछ विपरीत ख्याल उसे दहला भी जाते हैं, एक जगह वह कहती है–''मुझे अपने ऊपर तरस आने लगा । मैं इस शहर में एक रात अचानक मर जाऊँगी, ×× जाने किन हाथों में मेरा अन्तिम संस्कार होगा । जाने कौन मेरे सेफ में पड़े साढे सात सौ रूपये साफ करेगा । जाने कौन बकाया वेतन और पी. एफ. वसूलेगा । जाने कौन मेरी अनगिनत साड़ियॉ पार करेगा । ×× कौन रोएगा, मेरी खातिर ।''[15] ... सच में बेचारी लड़कियों की बहुत दुविधाजनक स्थिति है । सम्भवतः यह संक्रमण काल है । पुराना अस्वीकृत हो रहा है, नया है, पर स्पष्ट नहीं है ।

इस कहानी संग्रह की विभिन्न कहानियों में चित्रित स्त्री पात्रों की दुविधाग्रस्त सोच स्पष्ट रूप से दिखाई देती है । एक ओर बंधनमुक्त जीने की लालसा है तो दूसरी ओर असुरक्षा की भावना और अकेलापन उन्हें भयभीत भी करता है । कभी विवाहित जोड़ों की दुर्गति देखकर और कभी अपने परिवारों में और कभी अपने आस–पास या समाचार पत्रों के समाचारों के माध्यम से नवविवाहिताओं पर किए गए जुल्म या उनपर जिम्मेदारियों का लाद दिया जाना, उनको दी जाने वाली मानसिक, शारीरिक प्रताड़नाएँ भी अपने पॉवों पर खड़ी अविवाहित लड़कियों में विवाह के प्रति उदासीनता अथवा विमुखता, पैदा कर रही हैं।

यद्यपि समाज में प्रत्येक मानव; स्त्री हो या पुरूष या कोई भी; स्वतन्त्र है लेकिन सामाजिक व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने के लिए ही कुछ नियम बनाए गए होंगे जिनकी पालना सभी के लिए अनिवार्य होगी । धीरे–धीरे जब कभी भी कोई एक वर्ग अपने अधिकारों का दुरूपयोग करने लगता है और दूसरा लम्बे समय तक शोषण का शिकार रहता है, विद्रोह की चिंगारी तभी सुलगती है और फिर एक समय ऐसा आता है जब यह चिंगारी लपलपाती ज्वाला के रूप में प्रकट होती है जो बहुत कुछ लील लेती है । हमारे

समाज में स्त्री और दलित के साथ यही हुआ हैं सन्तुलन बिगड़ा तभी भय है, विद्रोह है और अब तो कहीं –कहीं यह कुत्सित रूप लेने लगा है जो वर्तमान और आने वाली पीढ़ियों के लिए अच्छा नहीं है । हम यदि एक स्वस्थ समाज व सामाजिक व्यवस्था चाहते हैं तो अधिकारों के दुरूपयोग की रोकथाम अत्यावश्यक है । अधिकारों के साथ सभी को अपने कर्त्तव्यों का भी पालन करना होगा । सद्भावना, उदारता, ज़िम्मेदारी लेना, इन्सान को इन्सान समझना, विनम्रता, दयालुता जैसे मानव मूल्यों की ओर लौटना ही होगा ।

संदर्भ सूची

1. **कवर पेज**, पचीस साल की लड़की (कहानी संग्रह), ISBN-10, 8189850121, लेखिका–ममता कालिया, पहला संस्करणः (जनवरी, 2006), प्रकाशक रेमाधव पब्लिकेशन्स, प्रा.लि. नई दिल्ली–1100051
2. **चिर–कुमारी**, पचीस साल की लड़की, लेखिका–ममता कालिया
3. **कौए और कोलकाता**, पचीस साल की लड़की, लेखिका–ममता कालिया
4. **कौए और कोलकाता**, पचीस साल की लड़की, लेखिका–ममता कालिया
5. **सेमिनार**, पचीस साल की लड़की, लेखिका–ममता कालिया
6. **तोहमत**, पचीस साल की लड़की, लेखिका–ममता कालिया
7. **खानदान**, पचीस साल की लड़की, लेखिका–ममता कालिया
8. **बीमारी**, पचीस साल की लड़की, लेखिका–ममता कालिया
9. **बीमारी**, पचीस साल की लड़की, लेखिका–ममता कालिया
10. **पचीस साल की लड़की**, लेखिका–ममता कालिया
11. **अकेलियॉ–दुकेलियॉ**, लेखिका–ममता कालिया
12. **अकेलियॉ–दुकेलियॉ**, लेखिका–ममता कालिया
13. **अकेलियॉ–दुकेलियॉ**, लेखिका–ममता कालिया
14. **अकेलियॉ–दुकेलियॉ**, लेखिका–ममता कालिया
15. **अकेलियॉ–दुकेलियॉ**, लेखिका–ममता कालिया
16. **अकेलियॉ–दुकेलियॉ**, लेखिका–ममता कालिया